

संरक्षति क्षेत्रों में संकट में गदिध

प्रलिमिस के लयि:

[वन्यजीव \(संरक्षण\) अधनियम, 1972](#), [वन्य जीवों और वनस्पतयिों की लुप्तपराय प्रजातयिों में अंतरराष्ट्रीय वयापार पर कनवेंशन \(CITES\)](#), [प्रकृतिसंरक्षण के लयि अंतरराष्ट्रीय संघ \(IUCN\)](#), [कीटनाशक वषिकतता](#)

मेन्स के लयि:

गदिधों की आबादी में गरिावट के पीछे की स्थति और कारण, गदिधों की घटती आबादी के मुद्दे से नपिटने के लयि सरकार की पहल, वैश्विक वन्यजीव संरक्षण प्रयासों के साथ भारत का सहयोग ।

[स्रोत: डाउन टू अर्थ](#)

चर्चा में कयों?

हाल के अध्ययनों से पता चला है कि [संरक्षति क्षेत्रों में भी गदिध डाईकलोफेनाक](#) जैसी बषिकृत दवाओं से सुरक्षति नहीं है । वैज्ञानिकों ने वर्ष 2018 से 2022 के बीच छह राज्यों (हमिाचल प्रदेश, राजस्थान, मध्य प्रदेश, कर्नाटक, तमलिनाडु व केरल) के संरक्षति और गैर-संरक्षति दोनों क्षेत्रों में गदिधों के घासलों तथा बसेरों के आस-पास से इनके मल के नमूने एकत्र कयि थे । इन नमूनों का [डीऑक्सीराइबोन्यूक्लिक एसडि यानी DNA](#) वशिलेषण करके गदिधों के आहार का अध्ययन कयि गया था । एकत्र कयि गए इन नमूनों से गदिध प्रजातयिों और उनके खाने की आदतों की पहचान करने में मदद मलिी ।

- गदिध भोजन की तलाश करते समय लंबी दूरी तय करने की अपनी अवशिवसनीय क्षमता के लयि जाने जाते हैं । ये वशिल चारागाह क्षेत्र उन्हें पडोसी देशों से [डाईकलोफेनाक](#) के संपर्क में भी ला सकते हैं, जहाँ यह दवा अभी भी उपयोग में हो सकती है ।

भारत में गदिधों की प्रजातसे संबंधति मुख्य तथ्य कया है?

■ परचिय:

- वे [वन्यजीवों](#) की बीमारयिों को नयितरण में रखने में भी बहुमूल्य भूमिका नभिते हैं ।
- ये बड़े अपमार्जक (Scavenger) पक्षयिों की **22 प्रजातयिों में से एक है** जो मुख्य रूप से उषणकटबिंधीय और उपोषणकटबिंधीय क्षेत्रों में रहते हैं ।
- ये प्रकृति के अपशषिट संग्रहकर्त्ता के रूप में एक महत्त्वपूर्ण कार्य करते हैं और पर्यावरण को अपशषिट से मुक्त रखने में सहायता करते हैं ।
- **भारत, गदिधों की 9 प्रजातयिों** जैसे ओरिएटल व्हाइट-बैकड, लॉन्ग-बलिड, सलेंडर-बलिड, हमिलयन, रेड-हेडेड, इज़पिशयिन, बयिरडेड, सनिरयिस और यूरेशयिन ग्रफिॉन का नविस स्थान है ।

■ आबादी में कमी:

- दक्षिण एशयिाई देशों, वशेषकर **भारत, पाकसितान और नेपाल** में गदिधों की आबादी में **उल्लेखनीय कमी** देखी गई है ।
- इनकी संख्या में कमी का मुख्य कारण 1990 के दशक के अंत और 2000 के दशक की शुरुआत में पशुओं के उपचार में दर्द नवारक दवा [डाईकलोफेनाक](#) का वयापक उपयोग था ।
- इसके परणामस्वरूप कुछ क्षेत्रों में **आबादी में 97% से अधिक की कमी** देखी गई, जसिसे पारस्थितिक संकट उत्पन्न हुआ ।

■ पारस्थितिकी तंत्र में गदिधों की भूमिका:

○ अपघटन और पोषक चकरण:

- गदिध कुशलतापूर्वक मृत जानवरों का माँस खाते हैं, जसिसे **शवों के ढेर जमा होने और उन्हें सडने से बचाया जा सकता है** ।
- यह कार्बनिक पदार्थों को वघिटति करने और पोषक तत्वों को मृदा में वापस लाने में सहायता करता है, जसिसे पौधों की वृद्धि एवं पारस्थितिकी तंत्र के समग्र स्वास्थ्य को लाभ होता है ।

○ रोग नवारण:

- **गदिधों का पेट अत्यधिक अम्लीय पाचन रस के साथ अवशिवसनीय रूप** से मज़बूत होता है । यह शक्तशाली एसडि बैक्टीरयिा और वायरस को मार सकता है जो एंथ्रेक्स, रेबीज़ तथा बोटुलिज़्म जैसी बीमारयिों का कारण बन सकते हैं, इस प्रकार **रोगजनकों**

- के लिये वास्तविक "मृत-अंत" के रूप में कार्य करते हैं।
- संकेतक प्रजाति:
 - गद्विध अपने पर्यावरण में परिवर्तन के प्रति संवेदनशील होते हैं। गद्विधों की आबादी में कमी प्रदूषण या खाद्य स्रोतों की कमी जैसी व्यापक पारस्थितिक समस्या का संकेतक हो सकती है।

//



गद्विधों की आबादी में कमी के पीछे क्या कारण हैं?

- औषध वषिकतता:
 - 20वीं सदी के अंत में डाईक्लोफेनाक, केटोप्रोफेन और एसेक्लोफेनाक जैसी दर्द नवारक दवाओं के उपयोग से गद्विधों की आबादी के लिये वनिाशकारी परणाम सामने आए।
 - आमतौर पर पशुओं में दर्द और सूजन का इलाज करने के लिये इस्तेमाल की जाने वाली ये दवाएँ गद्विधों के लिये वषिली होती हैं, जब ये इलाज के दौरान उपयोग की जाती हैं, क्योंकि गद्विध जानवरों के शवों को खाते हैं।
 - वषिष रूप से डाईक्लोफेनाक गद्विधों में घातक गुरदे की वफिलता का कारण बनता है और केटोप्रोफेन व एसेक्लोफेनाक के साथ इसी तरह के प्रभावों का दस्तावेज़ीकरण किया गया है।

- **द्वितीयक वषिकृतता:**
 - गद्वध सफाईकरमी होते हैं, जो अकसर **कीटनाशकों या अन्य वषिकृत पदार्थों** से दूषति शवों का सेवन करते हैं।
 - सीसे (लेड) के गोला-बारूद से शकवार कयि गए जानवरों के शवों को खाने वाले गद्वध **घातक लेड वषिकृतता** का शकवार हो सकते हैं।
 - यह "द्वितीयक वषिकृतता" एक महत्त्वपूर्ण खतरा उत्पन्न करती है, जससे उनकी आबादी में और कमी आती है।
- **पर्यावास कषति:**
 - शहरीकरण, **वनों की कटाई (Deforestation)** और कृषिवसितार के कारण नवास स्थान का नुकसान हुआ है, गद्वधों के घोंसले के स्थान, बसेरा कषेत्र एवं खाद्य स्रोत नष्ट हो गए हैं। उपयुक्त आवास की कमी उनके अस्ततिव में बाधा उत्पन्न करती है।
- **बुनयादी ढाँचे के साथ टकराव:**
 - गद्वध वद्वियुत लाइनों, पवन टरबाइनों और अन्य मानव नरिमति संरचनाओं से टकराने के प्रतसंवेंदनशील होते हैं, जससे चोटें या मौतें होती हैं तथा उनकी आबादी में कमी आती है।
- **अवैध शकवार और शकवार:**
 - कुछ कषेत्रों में, सांस्कृतिक मान्यताओं या **अवैध वन्यजीव व्यापार के कारण गद्वधों** का शकवार कयि जाता है, जससे जीवति रहने के लयि उनका संघर्ष और बढ़ जाता है।
- **रोगों का प्रकोप:**
 - **एवयिन पॉक्स व एवयिन फलू** जैसी बीमारयिाँ भी गद्वधों की आबादी पर हानकवारक प्रभाव डाल सकती हैं, जससे इनकी आबादी में और कमी आ सकती है।

भारत द्वारा कयि गये गद्वध संरक्षण प्रयास क्या हैं?

- **नशीली दवाओं के खतरे को समाप्त करना:**
 - **डाईक्लोफेनाक पर प्रतबिध:** **डाईक्लोफेनाक** के वनाशकारी प्रभाव को स्वीकार करते हुए, **भारत ने 2006 में पशु चकितिसा** में इसके उपयोग पर प्रतबिध लगा दयि।
 - उपचारति पशुओं के शवों को खाने के कारण होने वाली कडिनी की वफिलता से गद्वधों को बचाने की दशिा में यह एक महत्त्वपूर्ण कदम था।
 - **प्रयावरण, वन और जलवायु परविरतन मंत्रालय** ने देश में गद्वधों के संरक्षण के लयि **गद्वध कार्य योजना 2020-25** का शुभारंभ कयि है।
 - यह डाईक्लोफेनाक का न्यूनतम उपयोग सुनश्चित करेगा और गद्वधों के मुख्य भोजन, मवेशयिों के शवों को वषिला होने से बचाएगा।
 - **प्रतबिध का वसितार:** अगस्त 2023 में भारत ने गद्वधों के लयि संभावति खतरे को स्वीकार करते हुए **पशु चकितिसा प्रयोजन हेतु केटोप्रोफेन और एसकिलोफनिक के उपयोग पर प्रतबिध** लगा दयि।
- **बंदी प्रजनन (Captive Breeding) और पुनरुत्पादन:**
 - **गद्वध संरक्षण प्रजनन केंद्र (VCBC):** भारत ने VCBC का एक नेटवर्क स्थापति कयि, जससे **सर्वप्रथम वर्ष 2001 में पजौर, हरयिाणा में स्थापति** कयि गया था।
 - ये केंद्र **लुप्तप्राय गद्वध प्रजातयिों के बंदी प्रजनन पर ध्यान केंद्रति** करते हैं, जससे वनों में इनकी स्वस्थ आबादी बढ़ाने के लयि एक सुरकषति वातावरण प्रदान कयि जाता है।
 - वर्तमान में **भारत में नौ गद्वध संरक्षण और प्रजनन केंद्र (VCBC)** हैं, जनिमें से तीन सीधे **बॉम्बे नेचुरल हसिट्री सोसाइटी (BNHS)** द्वारा प्रशासति हैं।
- **गद्वधों का बसेरा:**
 - झारखंड में गद्वधों की घटती आबादी को संरक्षति करने के सक्रयि प्रयास में, कोडरमा ज़िले में एक 'गद्वधों का बसेरा (Vulture Restaurant)' स्थापति कयि गया है। इस पहल का उद्देश्य गद्वधों पर पशुधन दवाओं (Livestock Drug), वषिष रूप से डाईक्लोफेनाक के प्रतकिल प्रभाव को दूर करना है।
- **अन्य गद्वध संरक्षण पहलें:**
 - गद्वध प्रजातयिों को **वन्यजीव आवासों के एकीकृत वकिस (IDWH)** के 'प्रजाति पुनर्प्राप्त कियकरम' के तहत संरक्षति कयि जाता है।
 - **गद्वध संरक्षण कषेत्र कार्यक्रम** को देश के आठ अलग-अलग स्थानों पर कार्यान्वति कयि जा रहा है जहाँ गद्वधों की आबादी मौजूद थी, जसिमें उत्तर प्रदेश में दो स्थान शामिल हैं।
 - **दाढी वाले, लंबी चोंच वाले, पतले चोंच वाले और सफेद पीठ वाले** गद्वध **वन्यजीव संरक्षण अधनियम 1972** की अनुसूची 1 के तहत संरक्षति हैं। जबकि बाकी को 'अनुसूची IV' के तहत संरक्षति कयि गया है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:**
 - SAVE (एशया के गद्वधों को वलुप्त होने से बचाना): प्रवृत्त, कषेत्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय संगठनों का संघ, जो दक्षणि एशया के गद्वधों को दुर्दशा से बचाने के लयि संरक्षण, अभयान व फंडगि जैसी गतिविधयिों की देखरेख और समन्वय करने के लयि बनाया गया है।

अमेरकी बाल्ड ईगल पर केस स्टडी:

- **अमेरकी बाल्ड ईगल** लचीलेपन का एक प्रतीक है।
- इसकी आबादी में एक बार **डाइक्लोरोडफिनिलिट्राइक्लोरोइथेन (DDT)** के वनाशकारी प्रभावों के कारण काफी गरिवट आई थी, जो एक शक्तशाली कीटनाशक था, जसिने **गद्वधों के प्रजनन को बाधति कयि** था।

- DDT के परणामस्वरूप मादा बाज़ (ईगल) बेहद पतले छलिके वाले अंडे देती हैं, जसिसे वे घोंसला नहीं बना पाते हैं।
- इस मुद्दे के समाधान के लिये वर्ष 1972 में कृषि उपयोग हेतु DDT पर राष्ट्रव्यापी प्रतिबंध लागू किया गया था। इस महत्त्वपूर्ण कदम वर्ष 1973 में लुप्तप्राय प्रजाति अधिनियम के पारित होने के साथ ईगल के लिये आवश्यक सुरक्षा प्रदान की।
- शिकार पर प्रतिबंध, घोंसले के स्थानों के आसपास आवास संरक्षण एवं प्रजनन के कारण बाल्ड ईगल की आबादी में धीरे-धीरे वृद्धि हो रही है।
- अमेरिकी अधिकारियों के अनुसार वर्ष 2009 के बाद से बाल्ड ईगल की संख्या चार गुनी हो गई है। इस सफलता की कहानी वर्ष 2007 में ईगल को लुप्तप्राय प्रजातियों की सूची से हटाने के साथ समाप्त हुई।

आगे की राह

- हानिकारक पशु चिकित्सा दवाओं (जैसे डार्इक्लोफेनाक) को वनियमिति करने एवं सुरक्षित विकल्पों को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। साथ ही नमिसुलाइड जैसी दवाओं पर व्यापक प्रतिबंध को बढ़ावा देना भी महत्त्वपूर्ण है।
- गदिधों को संरक्षित करने के लिये उचित शव निपटान पर शिक्षा एवं सुरक्षित भोजन उपलब्धता के साथ गदिध भोजन केंद्रों की स्थापना की आवश्यकता है।
- भोजन एवं घोंसला बनाने वाले क्षेत्रों के बीच गलियारों के निर्माण के साथ-साथ घोंसला निर्माण वाले स्थानों की उचित पहचान और सुरक्षा की जानी चाहिये।
- पशु चिकित्सा में डार्इक्लोफेनाक के उपयोग को पूर्ण रूप से समाप्त करने के लिये नरितर नगिरानी एवं सतर्कता की आवश्यकता है।
- गदिध संरक्षण की सफलता बहु-आयामी दृष्टिकोण पर निर्भर करती है, साथ ही भारत के चल रहे पर्यास समान चुनौतियों का सामना करने वाले अन्य देशों के लिये एक मॉडल प्रस्तुत करते हैं।

दृष्टिमुख्य परीक्षा प्रश्न:

प्रश्न. गदिधों की आबादी में गरिवट के कारणों पर चर्चा कीजिये, और साथ ही गदिधों की घटती आबादी में वृद्धि के लिये की गई सरकारी पहलों का भी उल्लेख कीजिये।

UPSC सविलि सेवा परीक्षा, वगित वर्ष के प्रश्न

??????????:

प्रश्न. गदिध जो कुछ साल पहले भारतीय ग्रामीण इलाकों में बहुत आम हुआ करते थे, आजकल कम ही देखे जाते हैं। इसके लिये ज़मिमेदार है (2012)

- नई आक्रामक प्रजातियों द्वारा उनके घोंसले का वनिाश
- पशु मालिकों द्वारा अपने रोगग्रस्त मवेशियों के इलाज हेतु इस्तेमाल की जाने वाली दवा
- उपलब्ध भोजन की कमी
- व्यापक और घातक बीमारी।

उत्तर: (b)